सत्पथ की ओर

पहला कदम

जैन बाल-बोध (भाग-1)

आशीर्वाद

गुजरात संत केसरी प.पू. 108 आचार्य श्री भरतसागरजी महाराज

लेखन-संकलन

ब्रा.ब्र.क्षु. 105 श्री भव्यमति माताजी (संघस्थ)

आओ बच्चों, आओ बच्चों, चलें पाठशाला हम तुम।
वहाँ मिलेंगे सद्गुण हमको, और धर्म सीखेंगे हम॥

हमें आचरण सिखलाती – हमारी पाठशाला है।
हमें व्यवहार सिखलाती – हमारी पाठशाला है।
हमें जिनमंदिर बुलाती – हमारी पाठशाला है।
जहाँ सद्ज्ञान है मिलता – हमारी पाठशाला है।
हमें णमोकार है जपना – सिखाती पाठशाला है।
सदा आदर–विनय करना – सिखाती पाठशाला है।
माता–पिता की सेवा करना – सिखाती पाठशाला है।
कभी आपस में न लड़ना – सिखाती पाठशाला है।
सदा पापों से तुम बचना – सिखाती पाठशाला है।
क्या खाना और पीना – सिखाती पाठशाला है।
बुरी आदत न तुम लाना – सिखाती पाठशाला है।
प्रभु दर्शन नित करना – सिखाती पाठशाला है।
जिनवाणी को नित पढ़ना – सिखाती पाठशाला है।
गुरु सेवा में नित रहना – सिखाती पाठशाला है।
हमें परमेष्ठि है बनना – सिखाती पाठशाला है।
धर्म पालो सदा अपना – सिखाती पाठशाला है।
चलें सत्पथ पर कैसे – सिखाती पाठशाला है।
सही जैनी बने कैसे – सिखाती पाठशाला है।
फिर जिनेन्द्र बने कैसे – सिखाती पाठशाला है।

आओ बच्चों, आओ बच्चों, चलें पाठशाला हम तुम।
वहाँ मिलेंगे सद्गुण हमको, और धर्म सीखेंगे हम॥

सत्पथ की ओर

पहला कदम

जैन बाल-बोध (भाग-1)

आशीर्वाद

गुजरात संत केसरी प.पू. 108 आचार्य श्री भरतसागरजी महाराज

लेखन-संकलन

ब्रा.ब्र.क्षु. 105 श्री भव्यमति माताजी (संघस्थ)

सत्पथ की ओर पहला कदम– जैन बाल बोध (भाग – 1)

आशीर्वाद	गुजरात संत केसरी प. पू. 108 आचार्य श्री भरत सागर जी महाराज
प्रेरणा	बा.ब्र. क्षु 105 श्री चन्द्रमति माताजी (संघस्थ)
लेखन–संकलन	बा.ब्र. क्षु 105 श्री भव्यमति माताजी (संघस्थ)
प्रबन्ध संपादक	श्री णमोकार चन्द जैन, जयपुर
आवृत्ति	प्रथम (वर्ष 2011) प्रतियां : 1000
प्रकाशक/प्राप्ति स्थल	सत्पथ फाउण्डेन्शन चेरिटेबल ट्रस्ट श्री बी. के. शाह एफ–1, एस.पी. चेम्बर्स आर.बी. देसाई रोड, वडोदरा (गुजरात) फोन : 0265–3913628/2370816
पुण्यार्जनकर्ता	श्री दिगम्बर जैन समाज आदिनाथ मार्ग, पर्वत पाटिया, सूरत, गुजरात
मुद्रक	जय कुमार जैन 1156, संघी जी का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर–302003 फोन : 0141–2322556 मो. : 09414237838

मूलनायक श्री 1008 आदिनाथ भगवान

श्री 1008 पद्‌म प्रभु भगवान

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान

श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर

पर्वत पाटिया, सूरत (गुज.)

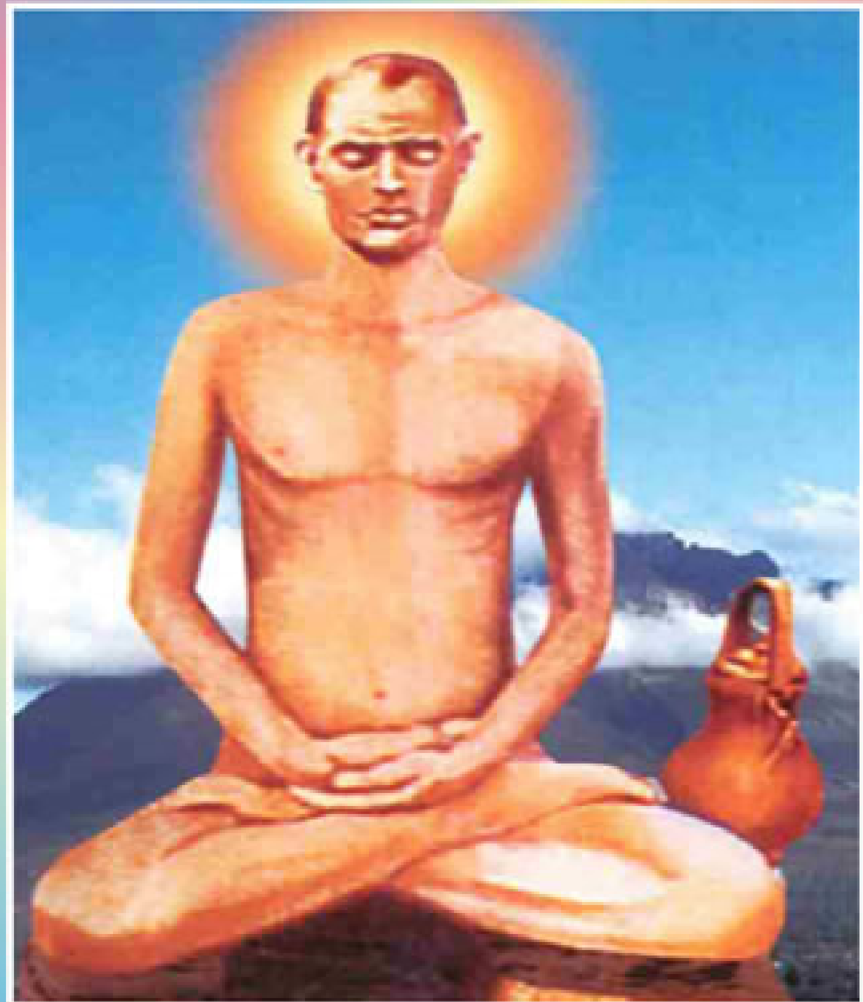

प. पू. 108
आचार्य
श्री शान्ति सागर जी महाराज
(छाणी)

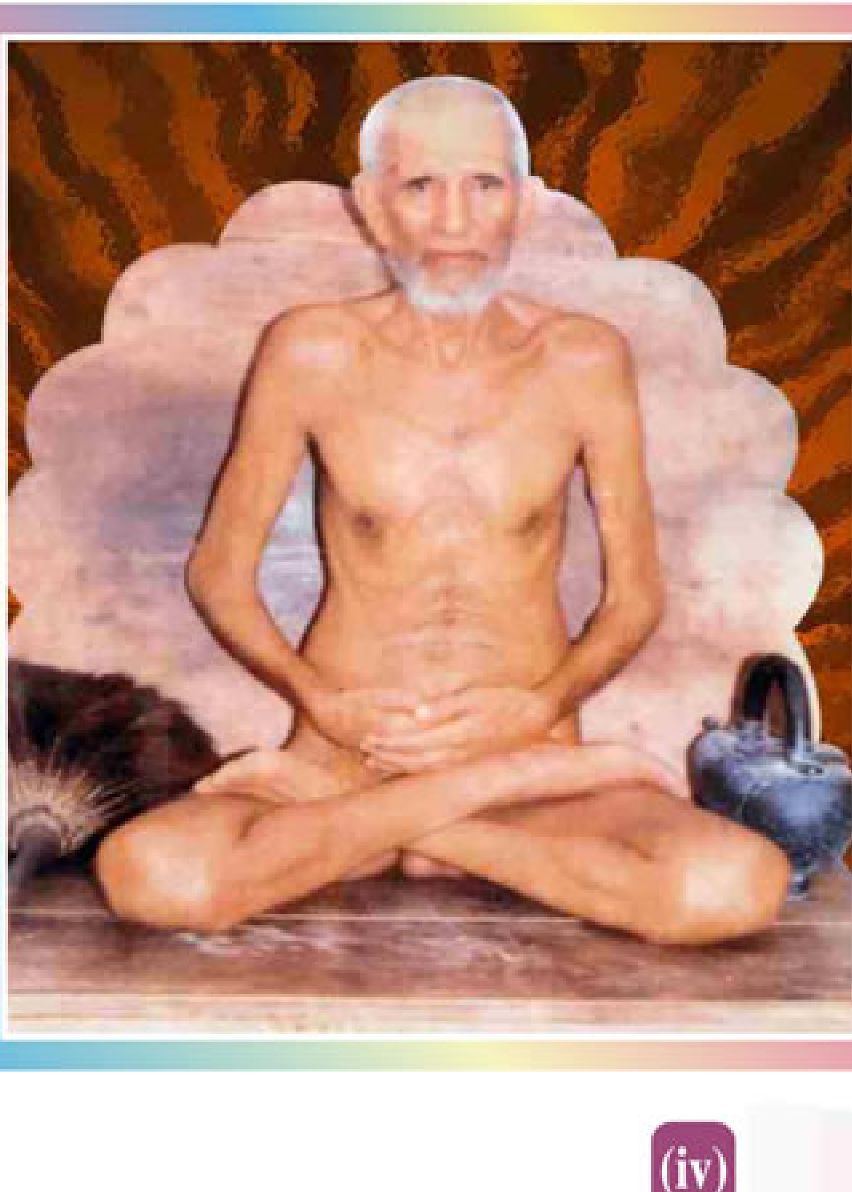

समाधि सम्राट
प. पू. 108
आचार्य
श्री सुमति सागर जी महाराज

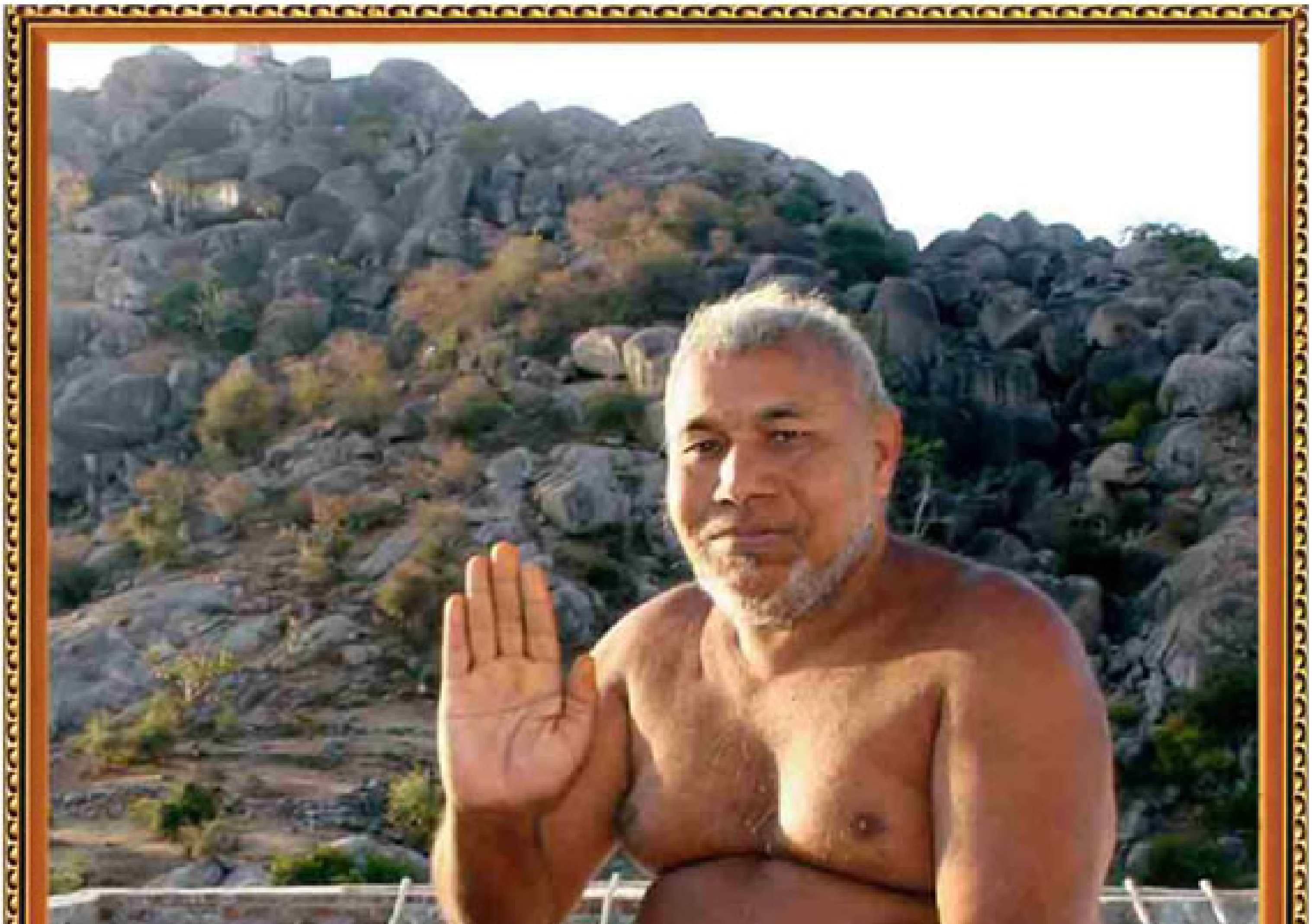

गुजरात संत केसरी
वात्सल्य शिरोमणि, प्रातः स्मरणीय
प. पू. गुरूवर 108 आचार्य श्री भरत सागर जी महाराज

गुजरात संत केसरी प. पू. गुरूवर 108 आचार्य श्री भरत सागर जी महाराज

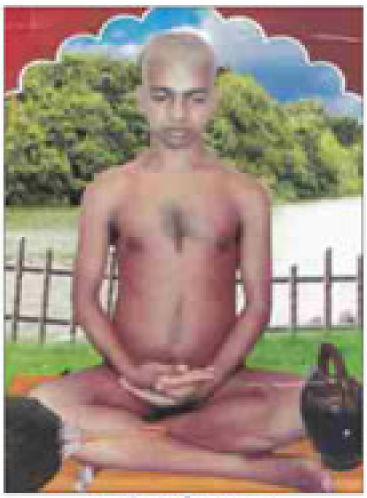

मुनि श्री 108
विप्रणत सागर जी महाराज

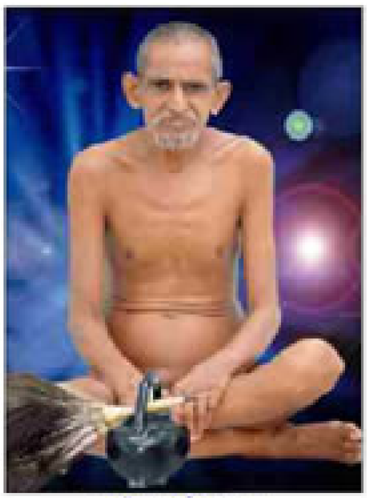

मुनि श्री 108
वीरसागर जी महाराज

बा. ब्र. क्षु. 105
श्री चन्द्रमति माताजी

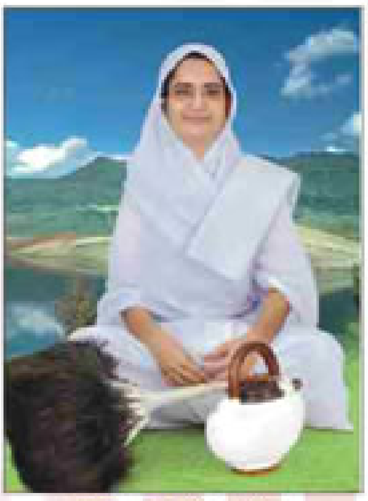

बा. ब्र. क्षु. 105
श्री भव्यमति माताजी

ब्र. सुधर्मा जी

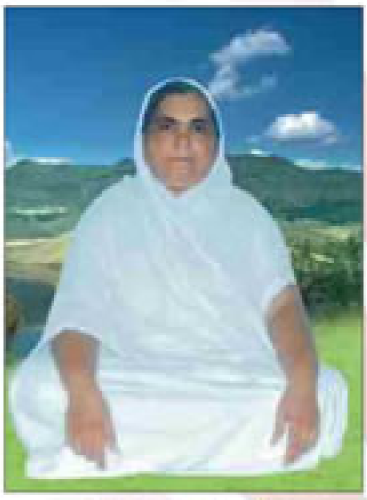

ब्र. सुप्रभा जी

सत्पथ फाउन्डेशन चेरिटेबल ट्रस्ट

R.No. E/5841 / Date : 03/04/2001

सत्पथ फाउन्डेशन चेरिटेबल ट्रस्ट, बड़ौदा (गुजरात)

प्रेरक : गुजरात संत केसरी प.पू. आचार्य श्री 108 भरतसागरजी महाराज

श्री १००८ आदिनाथ नमः

गुजरात संत केसरी

प. पू. आचार्यश्री १०८ भरतसागरजी महाराज

मंगलमय आशीर्वाद दिनांक :

भारतवर्ष का कण-कण धर्म संस्कार से सुसज्जित है। भरतचक्रवर्ती के अनादिकाल के शुभ संस्कार भारतीय संस्कृति को संजोये हुए हैं। यहाँ की भूमि में व्याप्त शुभ संस्कार इस जीव को मंगल की ओर ले जाते हैं। शुभ संस्कार जो कि पूर्व से ही विद्यमान हैं उनकी जनजागृति के लिए एवं नये मंगल संस्कारों के अंकुरारोपण के लिए "सत्पथ की ओर पहला कदम" (जैन बाल बोध भाग-1) का प्रकाशन किया जा रहा है। बालकों को बोध देना शुभ संस्कार का प्रथम तरीका है। शुभ संस्कार ही शुभ परिणत, शुभ उपयोग एवं शुभ गति की प्रथम सिढी है। संघस्थ क्षुल्लिकाद्वय एवं विशेषकर बा. ब्र. क्षु. श्री 105 चन्द्रमतिमाताजी की प्रेरणा से, बा. ब्र. क्षु. श्री 105 भव्यमतिमाताजी ने लेखन, संकलन, एवं संयोजन कर बालकों के लिए धर्म के संस्कारों के पथ को दर्शित किया है।

सत्पथ फाउन्डेशन चेरिटेबल ट्रस्ट बड़ौदा एवं यू. एस. ए. ने जैन संस्कृति को प्रकाशमान करने के लिए "सत्पथ की ओर पहला कदम" (जैन बाल बोध भाग-1) को प्रकाशित कराया है। सकल दिगम्बर जैन पर्वत पाटिया सूरत (गुज.) ने इस कृति मुद्रण में विशेष सहयोग देकर पुण्य अर्जन किया है। धर्ममय नैतिक संस्कारों की अभिवृद्धि के लिए सभी धर्मप्रेमी श्रावक-श्राविका के लिए मंगलमय दिव्य आशीर्वाद।

इति शुभम्

ॐ नमः

आशीर्वाद के साथ

आचार्य 108 भरतसागर

20-10-11

सूरत

अपनी बात

आज का बालक कल का भगवान है।

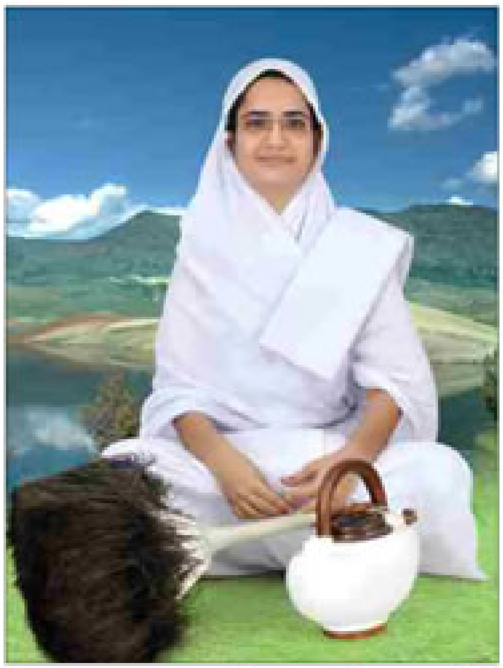

बा.ब्र.क्षु. 105 श्री भव्यमति माताजी

जीवन में संस्कारों का सर्वाधिक महत्व है। उत्तम देश, उत्तम कुल व मानव पर्याय प्राप्त होने पर भी यदि मानव को सदाचरण रूपी अच्छे संस्कार प्राप्त नहीं होते हैं तो उसका जीवन पशु के समान ही नि:सार हो जाता है।

जीवन निर्वाह की कला तो सृष्टि पर सभी जानते हैं लेकिन जीवन निर्माण और निर्वाण की कला से अनभिज्ञ हैं। जीवन निर्माण की दिशा में बाल अवस्था से ही धार्मिक व नैतिक शिक्षा का विशिष्ट योगदान है। प्रतिष्ठा, प्रतिस्पर्धा और प्रदर्शन की अँधी दौड़ में कहीं भटक न जाएं, इस हेतु अच्छे-बुरे की पहचान एवं हित-अहित का बोध कराने का, उस राह को सजग करने का सही समय यही है। संस्कारों का बीजारोपण ही भविष्य की निधि बन जाते हैं।

बालक की चेतना एक बीज है जिसे सुसंस्कार रूपी जल, सद्ज्ञान रूपी प्रकाश एवं सत्संग रूपी वायु से सींचा जाए तो उनके भीतर समाहित अनन्त संभावनाएँ भगवान महावीर के आदर्शों की ऊँचाई को पा सकती हैं।

"सत्पथ की ओर पहला कदम" - (जैन बाल बोध-भाग १) निर्मल, निर्दोष, कोमल, अबोध वरन् जिज्ञासु व अनन्त शक्ति के पुंज को सही दिशा बोध देने के लिए नन्हे-नन्हे हाथों में सादर समर्पित हैं।

मनुष्य की सुसुप्त चेतना को जाग्रत करने हेतु

जिनवाणी संजीवनी का कार्य करती है। अबोध बालकों को दी जाने वाली विद्या दवा की तरह होती है। जैसे बच्चा दवा को पीना पसन्द नहीं करता उसी तरह विद्या को पढ़ना भी। एक माँ अपने बच्चे को वात्सल्य प्रेम के साथ उसे बताशे के बीच में दवा रखकर या रस में घोलकर पिलाती है, बालक प्रसन्नतापूर्वक उसे पी लेता है। प्रस्तुत कृति में जैन दर्शन का प्राथमिक सामान्य ज्ञान, पौराणिक कथानक, सद्आचरण रूपी दवा को काव्य रूपी रस में घोला गया है। सुंदर चित्र, कहानी एवं गीतों के छोटे बताशों के अंदर सँजोकर रखा गया है जिसे बच्चे मात्र आँखों से देखते ही मुख में ले जाने की चेष्टा करेंगे और शीघ्र ही अन्तस् में समाहित करेंगे।

परम् श्रद्धेय प.पू. गुरुवर 108 आचार्यश्री भरतसागरजी महाराज का मंगल आशीर्वाद मेरी साधना जीवन का बल है। साथ ही जिनकी प्रेरणामयी मंगलवाणी मेरे साहित्य जीवन का सम्बल है ऐसी परम् विदुषी रत्न बा.ब्र.क्षु. 105 श्री चन्द्रमति माताजी का सराहनीय सहयोग मुझे मिला है। कृति के सम्पादन कार्य में श्री णमोकारचन्द जी जैन, जयपुर का विशेष सहयोग अभिनन्दनीय है।

सकल दिगम्बर जैन समाज, पर्वत पाटिया, सूरत के सहयोग से कृति को सुन्दर रूप से सुसज्जित कर आकर्षक रूप दिया गया है । धर्मप्रेमी श्रावक श्राविकायें आभार के पात्र हैं जिसके फलस्वरूप कृति आपके करकमलों में सुशोभित है।

कृति में विस्म्रत त्रुटियों के प्रति सुझाव प्रेषित कर वात्सल्य के पात्र बनें।

आज का बालक कल का भगवान है। जैन धर्म का भविष्य जिन हाथों में आना है वह अनमोल किशोर धन इस कृति का अनुकरण अनुशरण करते हुए जीवन निर्माण एवं सत्पथ की ओर अग्रसर हो, इसी सद्भावना के साथ गुरु चरणों में कोटि-कोटि नमन्!

बा.ब्र.क्षु. 105 भव्यमति माताजी

कहाँ क्या है ?

1. प्रार्थना – नमन करेंगे। 1

2. णमोकार मंत्र 3

3. पंच प्रभु को नमन करेंगे 5

4. महामंत्र की महिमा अपार

5. जो णमोकार सुने सनावे 6
वह निश्चित ही परमपद् पावें 7
(कहानी)

6. जीव-अजीव जानो। 10

7. इन्द्रिय-ज्ञान 12

8. मंगल-उत्तम-शरण 14

9. धर्म का प्रत्यक्ष फल (कहानी) 15

10. हमारा प्यारा जैन धर्म 17

11. जय जिनेन्द्र बोलिए 18

12. तीर्थंकर 19

13. विश्व वन्दनीय भगवान महावीर 24

14. बनना है हमको भगवान 28

15. जिन दर्शन ही निज दर्शन 29

16. देवभक्ति का सुफल (कहानी) 31

17. दर्शन स्तुति 32

18. जिनवाणी स्तुति 33

19. गुरु-वन्दना 34

20. अभ्यास क्रम 35

21. जैन प्रतिक 38

प्रार्थना - नमन करेंगे!

नमन करेंगे, नमन करेंगे, पंच प्रभु को नमन करेंगे।

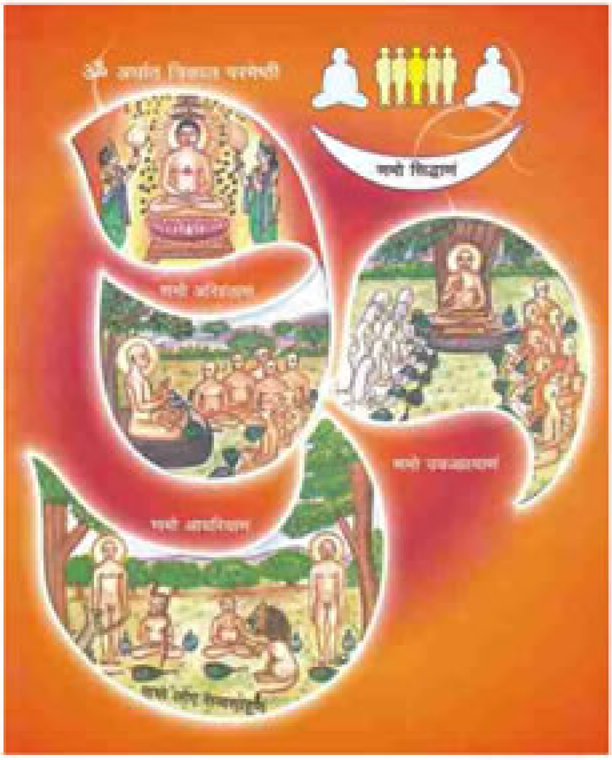

अरिहंत प्रभु आराध्य हमारे, सिद्ध प्रभुजी साध्य हमारे।
श्रद्धा के हम सुमन धरेंगे, पंच प्रभु को नमन करेंगे।
नमन करेंगे..... ॥

हमें आचरण जो सिखलाते, वे मुनिवर आचार्य कहाते।
हम बालक आचरण गहेंगे, पंच प्रभु को नमन करेंगे।
नमन करेंगे..... ॥

मुनिवर पढ़ते हमें पढ़ाते, उपाध्याय जी वे कहलाते।
उनसे विद्या सदा पढ़ेंगे, पंच प्रभु को नमन करेंगे।
नमन करेंगे..... ॥

रत्नत्रय जो गुरु से पाते, मोक्षमार्ग हमको दिखलाते।
उन मुनिवर के चरण पड़ेंगे, पंच प्रभु को नमन करेंगे।
नमन करेंगे.....॥

सद्ज्ञान को हम पायें, सत्पथ की ओर कदम बढ़ायें।
अपना जीवन चमन करेंगे, पंच प्रभु को नमन करेंगे।
नमन करेंगे.....॥

सब जीवों को सुखी रखेंगे, कभी किसी को दुःख न देंगे।
यही प्रार्थना रोज करेंगे, पंच प्रभु को नमन करेंगे।
नमन करेंगे.....॥

नमोस्तु! नमोस्तु! नमोस्तु!

प.पू. गुरुवर आचार्यश्री भरतसागरजी महाराज

पंच परमेष्ठि भगवान की जय।
जिनवाणी माता की जय।
प.पू. गुरुवर आचार्यश्री भरतसागरजी महाराज की जय।

"णमोकार मंत्र"

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आइरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं

अरिहन्तों को नमस्कार हो।
सिद्धों को नमस्कार हो।
आचार्यों को नमस्कार हो।
उपाध्यायों को नमस्कार हो।
लोक में सर्व साधुओं को नमस्कार हो।

प्रिय बालकों

- आराध्य के प्रति सच्ची श्रद्धा से भरा हुआ मन ही मंत्र कहलाता है।
- जिस मंत्र में पंच परमेष्ठि को नमस्कार किया गया है, उस मंत्र को णमोकार मंत्र कहते हैं।
- यह पंच नमस्कार मंत्र जैन धर्म का मूल मंत्र है।
  इसे महामंत्र, नवकार मंत्र, अपराजित मंत्र, अनादिनिधन मंत्र एवं मंत्रराज भी कहते है।
- णमोकार मंत्र में 5 पद, 35 अक्षर, 58 मात्राएँ हैं।
- णमोकार मंत्र प्राकृत भाषा में एवं आर्या छंद में लिखा गया है।
- इस मंत्र में व्यक्ति विशेष को नहीं अपितु गुणों से युक्त जीवों को नमस्कार किया गया है।
- जो परम पद में स्थित होते हैं, उन्हें परमेष्ठि कहते हैं।

प्रात: उठ, लो प्रभु का नाम,
मात-पिता को करो प्रणाम।

"पंच प्रभु को नमन करेंगे!"

चार घातिया जो नाश करें,
वे **अरिहंत** प्रभु कहलाते हैं।

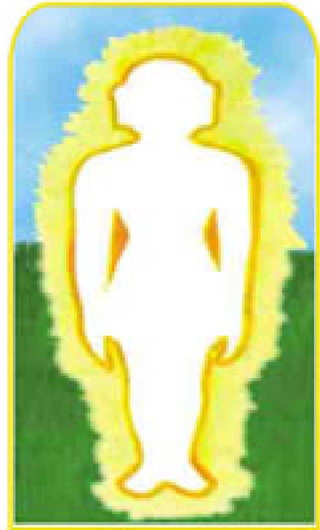

आठ कर्म जो नाश करें,
सिद्ध प्रभु कहलाते हैं।

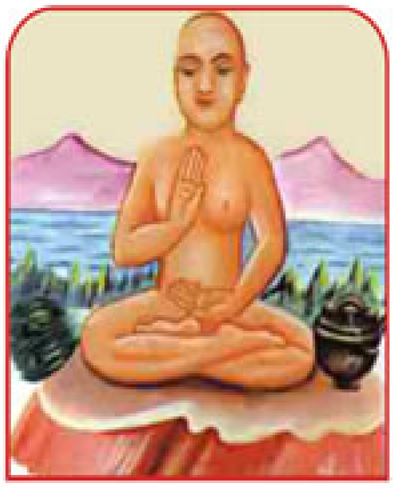

शिक्षा दीक्षा जो देते हैं वे **आचार्य** कहलाते हैं।

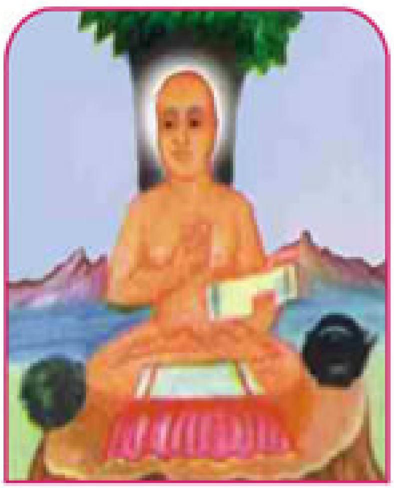

मुनिवर जो पढ़े पढ़ाते हैं,
वे उपाध्याय कहलाते हैं।

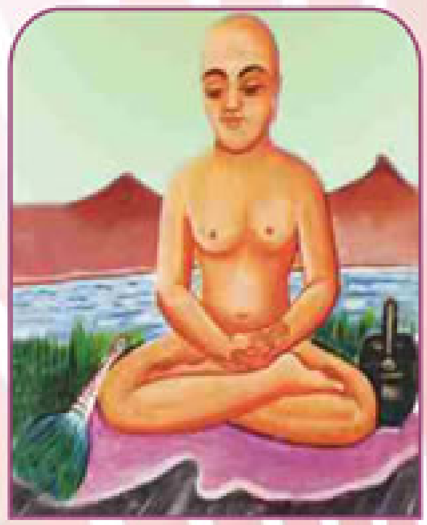

रत्नत्रय को जो ध्याते हैं,
साधु वे कहलाते हैं।

ये परमेष्ठि कहाते हैं,
इनको शीश झुकाते हैं।

✻ वर्तमान में हमें आचार्य, उपाध्याय व साधु परमेष्ठि के साक्षात् दर्शन होते हैं। ✻

4 महामंत्र की महिमा अपार!!!

ऐसो पंच णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलं।

णमोकार यह मंत्र कहाता,
सारे पाप नशाता है।
सब मंगल में पहला मंगल,
इसको माना जाता है।

इस मंत्र के स्मरण मात्र से सभी प्रकार के दु:ख, क्लेश, भय, पाप दूर हो जाते हैं एवं सुख शांति की अनुभूति होती है।

जीवन्धर ने मंत्र सुनाया,
कुत्ता मरकर स्वर्ग सिधाया।
पार्श्वनाथ ने मंत्र सुनाये,
नाग व नागिन देव कहाये।
अञ्जन चोर ने इनको ध्याया,
गगन गामिनी विद्या पाया।
सीताजी ने इसको ध्याया,
अग्नि कुण्ड को नीर बनाया।

मैं भी इसको ध्याऊँगा,
खुद परमेष्ठि बन जाऊँगा।

5

जो णमोकार सुने सुनावे, वह निश्चित ही परमपद पावे

भरत क्षेत्र के आर्यखण्ड में श्रेष्ठपुरी नाम की प्रसिद्ध नगरी है। इस नगरी में पद्मरुचि नाम का सेठ रहता था। एक दिन वह गुरु का उपदेश सुनकर घर जा रहा था। तभी रास्ते में एक घायल बैल को पीड़ा से तड़पते देखा।

सेठ ने दया करके उसको णमोकार मंत्र सुनाया। वह बैल मरकर णमोकार मंत्र के प्रभाव से इसी नगरी के राजा का पुत्र हुआ।

जिसका नाम वृषभध्वज रखा गया। वह बड़ा होकर राजा बना तो एक दिन हाथी पर बैठकर घूमने जा रहा था तब उस स्थान को देखकर, जहाँ पर बैल मरा था, उसे पूर्व जन्म का स्मरण हो आया तथा अपने उपकारी का पता लगाने के लिए उसने एक बड़ा जैन मन्दिर बनवाया। वहाँ दीवार पर बैल को णमोकार मंत्र सुनाते हुए एक सेठ का चित्र बनवाया एवं एक पहरेदार को लगाया कि जो व्यक्ति इस चित्र को देखकर आश्चर्य करे उसको मेरे पास लाना।

एक दिन पद्मरुचि सेठजी उस मन्दिर में आये और उन्होंने जैसे ही उस चित्र को देखा तो वे आश्चर्य करने लगे कि यह चित्र किसने बनवाया और क्यों, बनवाया? इस प्रकार आश्चर्य में देख पहरेदार ने उनको राजा के पास उपस्थित किया।

राजा ने पूछा– सेठजी ! आपने उस पत्थर के चित्र को देखकर आश्चर्य क्यों किया?

तब सेठजी बोले, राजन ! आज से 25 वर्ष पहले की घटना का स्मरण हो गया था। जब मैंने बैल को रास्ते में तड़पते हुए मरण के सम्मुख देखा तो मैंने उसको णमोकार मंत्र सुनाया था। मैंने उस घटना को पत्थर पर उत्कीर्ण किया हुआ देखा तो आश्चर्य से भर उठा। तब राजा बोला आज मैं अपने उपकारी को पाकर धन्य हो गया हूँ। आपके णमोकार मंत्र सुनाने से वह बैल आज राजा बना बैठा है। वह मैं हूँ। मेरी तिर्यंच अवस्था छूट गई और उत्तम कुल मनुष्य अवस्था प्राप्त हुई। इस मंत्रदान का मूल्य यद्यपि मैं नहीं चुका सकता, फिर भी आज्ञा दो– मैं आपका क्या उपकार करूँ ?

उस समय दोनों का परस्पर में अत्यधिक प्रेम हो गया और दोनों को सम्यक्त्व की प्राप्ति हो गई। दोनों ने श्रावक के व्रत ग्रहण कर लिए। दोनों ने इस पृथ्वी पर अनेक जिनमन्दिर बनवाये। आयु के अन्त में मरकर दोनों ही ऐशान स्वर्ग में देव हो गए।

अनन्तर कुछ भवों के पश्चात् महामंत्र सुनाने वाले ऐसे श्री पद्मरुचि का जीव दशरथ का पुत्र मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजी हुआ और (मंत्र सुनने वाला बैल) यानी वृषभध्वज का जीव सुग्रीव हुआ।

सुग्रीव विद्याधर ने सीता की खबर देने और रावण के साथ युद्ध में रामचन्द्र की सहायता की।

अनन्तर ये रामचन्द्र जी, सुग्रीव आदि महापुरुष दिगम्बरी दीक्षा लेकर घोर तपश्चरण करके तुंगीगिरि पर्वत से मोक्ष गए है। अतः यह महामंत्र ही इस जीव को अनेकों सुख प्राप्त कराकर अन्त में मोक्ष को प्राप्त करा देता है।

शिक्षा

- किसी भी दुःख से पीड़ित प्राणी को णमोकार मंत्र सुनाना चाहिए।
- अपने उपकारी को कभी भी नहीं भूलना चाहिए।
- अहो! णमोकार मंत्र की महिमा अपार है। श्रद्धासहित जो भी ध्याता है, सुनता है व सुनाता है वह निश्चित उनके समान गुणवान बनकर परमपद प्राप्त कर लेता है।

हम सब बच्चे आज ही से यह संकल्प करते है कि- प्रतिदिन हर कार्य करने से पहले, रात को सोने से पहले, सुबह जल्दी उठकर- कम से कम नौ (9) बार णमोकार मंत्र का जाप अवश्य करेंगे।

6 जीव – अजीव जानो।

जीव

जो सुख दुःख का अनुभव कर सकें,
जिसमें जानने-देखने की शक्ति है,
जो जीता था, जीता है और जीयेगा,
वह **जीव** कहलाता है।

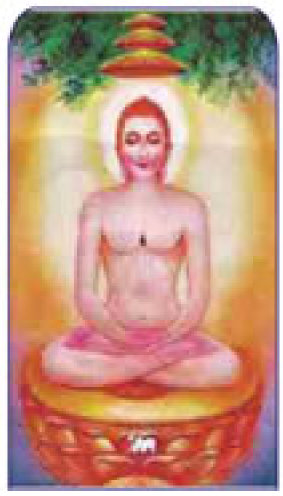

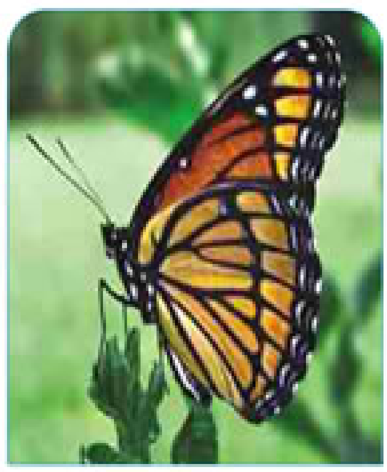

अजीव

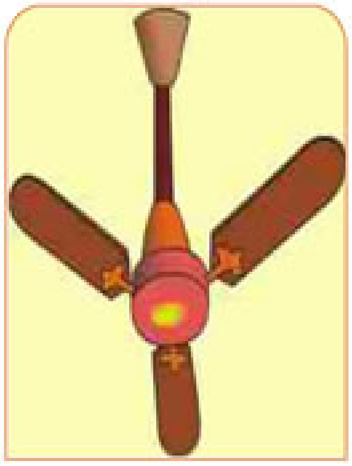

जो सुख दुःख का अनुभव न कर सकें,
जिसमें जानने देखने की शक्ति नहीं है,
जो अचेतन है,
वह **अजीव** कहलाता है।

7

इन्द्रिय – ज्ञान

इन्द्रियाँ कितनी होती है, इन्द्रियां पाँच होती है।
जिससे जीवों की पहचान, परिभाषा इन्द्रिय की जान।

छूकर ज्ञान कराती है,
स्पर्शन इन्द्रिय कहाती है।

जिह्वा स्वाद चखाती है,
रसना इन्द्रिय कहाती हे।

नासा गंध सुंघाती है,
घ्राण इन्द्रिय कहाती है।

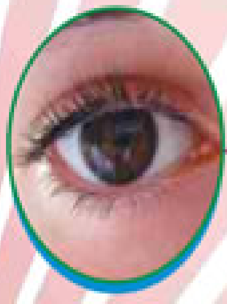

आँखें रंग दिखाती है,
चक्षु इन्द्रिय कहाती है।

कान शब्दों को सुनाती है,
कर्ण इन्द्रिय कहाती है।

इन्द्रिय – ज्ञान

इन सबकी है क्या पहचान, पाठ पढ़े हम इन्द्रिय ज्ञान।
स्पर्शन, रसना, घ्राण, चक्षु, कर्ण इन्द्रिय

जिससे छू जाने पर हल्का–भारी, रुखा–चिकना, कड़ा–नरम, ठंडा–गरम का ज्ञान होता है।

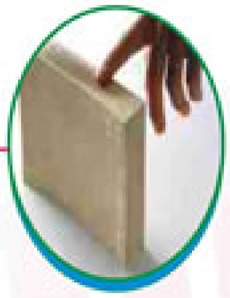

जिससे चखने पर खट्टा, मीठा, कड़वा, चरपरा, कषायला, स्वादों का ज्ञान होता है।

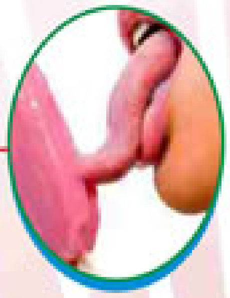

जिससे सूंघने पर सुगंध और दुर्गन्ध का ज्ञान होता है।

जिसके द्वारा काला, पीला, नीला, लाल, सफेद आदि रंगों का ज्ञान होता है।

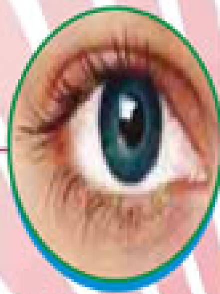

जिसके द्वारा आदमी, जानवर, बाजे आदि की आवाज सुनी जाती है।

8 मंगल उत्तम शरण

चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं,
सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं,
केवलि पण्णत्तो, धम्मो मंगलं।

अरिहन्त

मंगल कितने होते हैं ? मंगल चार होते हैं।
पहले मंगल अरिहंत हैं, दूजे सिद्ध होते हैं।
तीजे साधु मंगल हैं, धर्म मंगल चौथे हैं।
मंगल आनंददायक है, मंगल पाप धोते हैं।

चत्तारि लोगुत्तमा
अरिहंत लोगुत्तमा
सिद्ध लोगुत्तमा
साहु लोगुत्तमा
केवली पण्णत्तो,
धम्मो लोगुत्तमो।

सिद्ध

उत्तम कितने होते हैं ?
उत्तम चार होते हैं।
पहला उत्तम अरिहंत है,
दूजे सिद्ध होते हैं।
तीजे साधु उत्तम हैं,
उत्तम धर्म चौथे हैं।
उत्तम वह कहलाते हैं,
सर्वश्रेष्ठ जो होते हैं।

चत्तारि शरणं पव्वज्जामि
अरिहंत शरणं पव्वज्जामि
सिद्ध शरणं पव्वज्जामि
साहु शरणं पव्वज्जामि
केवलि पण्णत्तो,
धम्मो शरणं पव्वज्जामि।

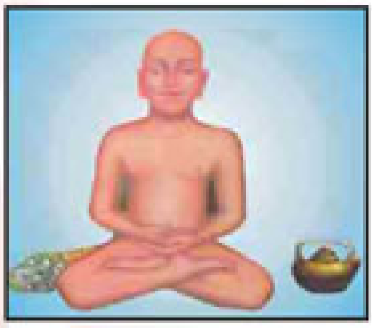

साधु

शरण कितनी होती है, शरण चार होती है।
अरिहंतों की पहली शरण, दूजी सिद्ध की होती है
साधुजनों की तीजी शरण, चौथी धर्म की होती है।
भय से रक्षा करती है, वह शरण कहलाती है।

जिन धर्म

जो शरण अपनाता है, मुक्ति उसकी होती है।

धर्म का प्रत्यक्ष फल

9

किसी समय पोदनपुर के राजा श्रीविजय राजसिंहासन पर विराजमान थे। अकस्मात् एक पुरूष आकर बोला कि हे राजन ! आज से सातवें दिन पोदनपुर के राजा के मस्तक पर महावज्र गिरेगा, अतः शीघ्र ही इसके प्रतिकार का विचार कीजिए।

उसी समय कुपित होकर युवराज बोला कि तू सर्वज्ञ है तो बता उस दिन तेरे मस्तक पर क्या पड़ेगा ? उस व्यक्ति ने कहा कि मेरे मस्तक पर अभिषेक के साथ रत्नवृष्टि पड़ेगी।

इस अभिमानपूर्ण कथन से राजा को आश्चर्य हुआ। उसे आसन पर बिठाकर उसका परिचय आदि पूछा। तब उसने बताया कि मैंने दिगम्बर मुनि के पास निमित्तज्ञान सीखा है। आज कुछ निमित्तों का फल जानकर मैंने सही बात बताई है। तब सभी ने उसको विदा करके चिंतित होकर राजा की सुरक्षा का विचार प्रारम्भ किया।

किसी ने कहा कि लोहे की सन्दूक में बन्द कर समुद्र में रख दो। किसी ने कहा कि विजयार्द्ध की गुफा में छिपा दो, आदि। इस पर मतिसागर नाम के बुद्धिमान मंत्री ने कहा कि निमित्तज्ञानी ने पोदनपुर नरेश के मस्तक पर वज्रपात की बात कही है तो मेरी समझ में ऐसा उपाय करो कि जिससे हर तरह से लाभ हो।

देखो ! श्रीविजय सात दिन के लिए राज्य का त्याग कर मन्दिर में धर्म ध्यान करें। यदि जीवित रहे तो पुनः राज्य करेगें, यदि मरण होगा तो समाधि से मरकर स्वर्ग प्राप्त करेंगे। यह बात राजा को और सभी मंत्री वर्गों को जंच गई। अनन्तर मंत्रियों ने एक यक्ष की प्रतिमा को राजसिंहासन पर स्थापित कर ''आप पोदनपुर के राजा हैं''

ऐसा कहकर उसकी पूजा की।इधर राजा ने सर्व भोजनादि का त्याग कर दान—पूजन आदि कार्य प्रारम्भ कर दिये और जिन चैत्यालय में शांति कार्य करते हुए बैठ गए।

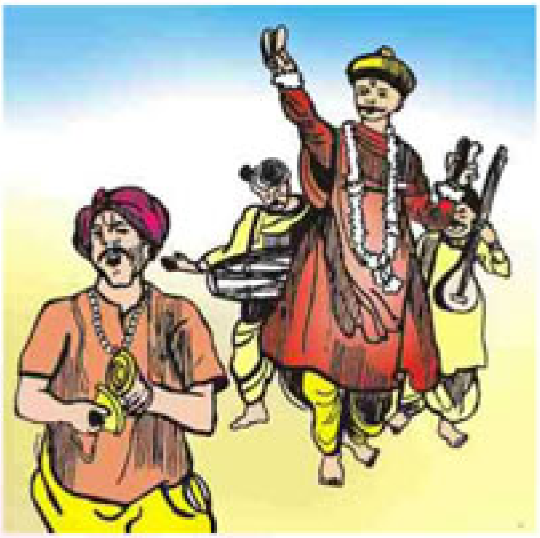

सातवें दिन भयंकर शब्द करते हुए महावज्र उस यक्ष की मूर्ति पर गिरा और राजा मन्दिर में पूजा—पाठ करते हुए उस उपद्रव से बच गए। इस घटना से नगर निवासीजनों में बहुत ही हर्ष व्याप्त हो गया।सर्वत्र नगाड़े आदि बाजे बजने लगे। राजा श्रीविजय की अकाल मृत्यु का योग टल गया ऐसा समझकर सभी मंत्रियों ने अरिहंत भगवान की भक्ति के साथ शांतिपूजा की। राजा को सिंहासन पर बिठाकर सुवर्ण घड़ों से राज्याभिषेक किया।

पुनः राजा ने उसी समय बड़े हर्ष के साथ उस निमित्तज्ञानी को बुलाकर उसका सत्कार किया और सौ गांव उसे दे दिए। इसके बाद बहुत काल तक उन्होंने सुख से राज्य किया ।ये श्रीविजय ही नवमें भव में महापुण्यशाली भगवान शांतिनाथ के समवशरण में चक्रायुध नाम के गणधर हुए हैं।

देखों बच्चों। यदि ये श्रीविजय महाराज राज्य का त्याग कर धर्म का अनुष्ठान नहीं करते तो अवश्य ही मृत्यु को प्राप्त हो जाते और मरकर दुर्गति में ही जाते।

सच है, धर्म में अचिंत्य शक्ति है,
धर्म ही हम सब के लिए मंगल है, उत्तम है,
जो स्वर्ग—मोक्ष का कारण है।
इसलिए हमेशा ही धर्म की शरण में रहना चाहिए।

हमारा प्यारा जैन धर्म

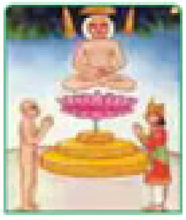

जिन्होंने अपनी इन्द्रियां व मन को जीत लिया है उन्हें **जिनेन्द्र (जिन)** कहते हैं।

दिशारूपी वस्त्र व रत्नत्रय को धारण करने वाले
जो जिनेन्द्र बनने का
पुरूषार्थ करते हैं उन्हें **दिगम्बर** कहते हैं।

जो जिनेन्द्र को मानते है वह जैन है।

जिनेन्द्र द्वारा प्रतिपादित धर्म को जैन धर्म कहते है।
यह धर्म ही तुम्हारी रक्षा करके तुम्हें सर्व सुखी बनायेगा।

अहो! यह मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे भगवान जिनेन्द्र (जैन धर्म व पंच परमेष्ठि) की शरण मिली है।

अब मैं सदैव ही जिनेन्द्र की मानूँगा और अपना कल्याण करूँगा।

जैन श्रावक के तीन मूल कर्तव्य बताए है।

1. नित्य देव दर्शन करना 2. जल छानकर पीना 3. रात्रि भोजन का त्याग।
हमें पारस्परिक बन्धुओं से आपस में 'जय जिनेन्द्र' बोलना चाहिए

जय जिनेन्द्र

11 जय जिनेन्द्र बोलिए

जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिए।
जय जिनेन्द्र की ध्वनि से अपना मौन खोलिए॥

जय जिनेन्द्र ही हमारा एकमात्र मंत्र हो।
जय जिनेन्द्र बोलने को हर मनुज स्वतंत्र हो॥
जय जिनेन्द्र बोलकर, हृदय के द्वार खोलिए।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिए॥

पाप छोड़, धर्म जोड़ ये जिनेन्द्र देशना।
अष्ट कर्म को मरोड़, ये जिनेन्द्र देशना॥
जाग! जाग! जाग! चेतन बहुकाल सो लिए।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिए॥

हे जिनेन्द्र! ज्ञान दो, मोक्ष का वरदान दो।
कर रहे हैं प्रार्थना हम, प्रार्थना पर ध्यान दो॥
जय जिनेन्द्र बोल बोल, खुद जिनेन्द्र हो लिए।
जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र, जय जिनेन्द्र बोलिए॥

तीर्थंकर

धर्म तीर्थ चलाते है,
तीर्थंकर कहलाते है।
तीर्थंकर होते चौबीस,
सदा झुकाओ इनको शीश।

तीर्थंकर धर्मोपदेश समवसरण में देते है।

- जो संसार से स्वयं तिरे व औरों को तारें उन्हें तीर्थंकर कहते है।
- तीर्थंकर चौबीस होते हैं।
- तीर्थंकरों की पहचान चिन्ह द्वारा होती है।
- तीर्थंकर के पाँच कल्याणक होते है। **गर्भ कल्याणक**, **जन्म कल्याणक** **तप कल्याणक**, **ज्ञान कल्याणक**, मोक्ष कल्याणक।

	तीर्थंकर		चिन्ह	
1	आदिनाथ		बैल	
2	अजितनाथ		हाथी	
3	संभवनाथ		घोड़ा	
4	अभिनन्दननाथ		बन्दर	
5	सुमतिनाथ		चकवा	
6	पद्मप्रभु		कमल	

	तीर्थंकर		चिन्ह	
7	सुपार्श्वनाथ		साथिया	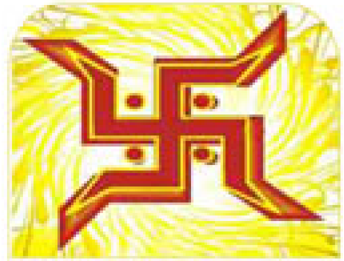
8	चन्द्रप्रभु		चन्द्रमा	
9	पुष्पदन्त		मगर	
10	शीतलनाथ		कल्पवृक्ष	
11	श्रेयांसनाथ		गैंड़ा	
12	वासुपूज्य	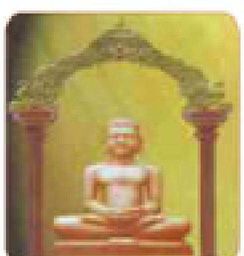	भैंसा	

	तीर्थंकर		चिन्ह	
13	विमलनाथ		सूकर	
14	अनन्तनाथ		सेही	
15	धर्मनाथ		वज्रदण्ड	
16	शान्तिनाथ		हिरण	
17	कुन्थुनाथ		बकरा	
18	अरहनाथ		मछली	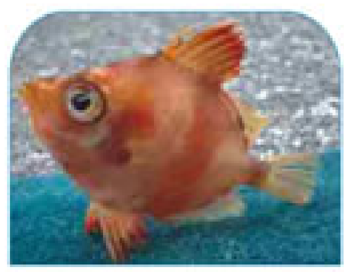

	तीर्थंकर		चिन्ह	
19	मल्लिनाथ		कलश	
20	मुनिसुव्रत		कछुआ	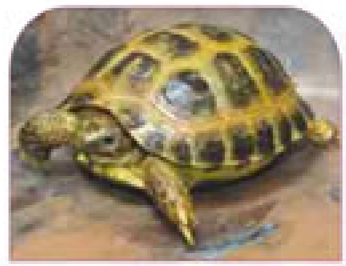
21	नमिनाथ		नीलकमल	
22	नेमिनाथ		शंख	
23	पार्श्वनाथ		सर्प	
24	महावीर		सिंह	

13 विश्व वन्दनीय भगवान महावीर

बने

वर्द्धमान

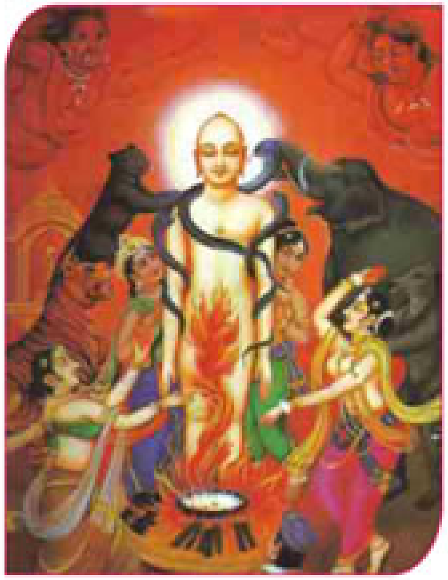

महावीर

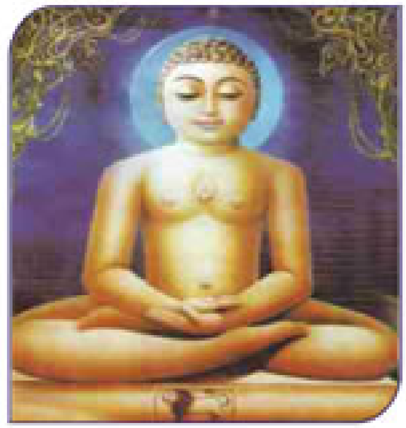

कुण्डलपुर नगरी अति प्यारी।
जन्मे अंतिम तीर्थंकर उपकारी॥
चैत्र सुदी तेरस तिथि आयी।
जन्म तिथि महावीर कहाई॥

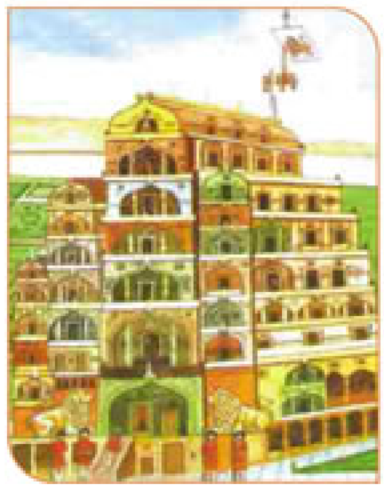

नद्यावर्त महल

त्रिशला जिनकी मात कहाये।
सिद्धारथ के घर में आये।।
मति श्रुत अवधि तीनों ज्ञान।
जन्म काल से जिनको ज्ञान।।

बाल ब्रह्मचारी कहलाये।
तीस वर्ष में मुनि पद पाये।।
बारह वर्ष किया था ध्यान।
पायो केवल ज्ञान महान।।

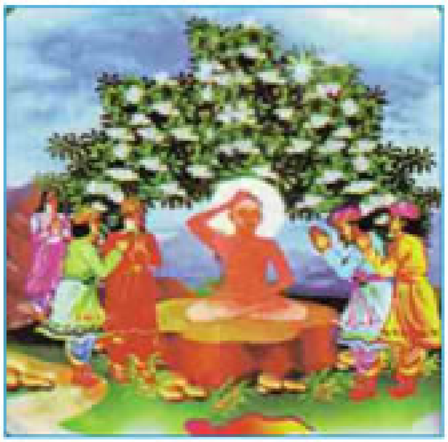

समवशरण देवेन्द्र रचाये।
गौतम गणधर शिष्य कहाये।।
'जीओ और जीने दो' उपदेश यह देते।
धर्म तीर्थ को आप चलाते।।

तीस वर्ष तक किया विहार।
भव्यों का करने उद्धार।।
हुए बहत्तर वर्ष के आप।
सिद्ध हुए तज सारे पाप।।

सिद्धक्षेत्र पावापुर जान।
हुआ वीर जिन को निर्वाण।।
तब से दीपावली पर्व महान।
जय हो महावीर भगवान।।

14 बनना है हमको भगवान

वीर प्रभु की हम संतान,
बनना है हमको भगवान।

णमोकार का करना ध्यान, इससे कटते पाप महान।
वीर प्रभु की हम संतान, बनना है हमको भगवान॥

माता-पिता का करना ख्याल, नित करना तुम प्रभु गुणगान।
वीर प्रभु की हम संतान, बनना है हमको भगवान॥

'जीओ और जीने दो' इनका गान, सुखी जीवन की यही है खान।
वीर प्रभु की हम संतान, बनना है हमको भगवान॥

गुरु शरण ही सच्ची जान, जिनवाणी का कहना मान।
वीर प्रभु की हम संतान बनना है हमको भगवान॥

आतम-देह भिन्न पहचान, मुनिपद से बनते भगवान।
वीर प्रभु की हम संतान, बनना है हमको भगवान॥

ॐ ह्रीं नमः

मैं प्रतिदिन 'ॐ ह्रीं नमः' की
एक माला का (108 बार) जाप करूँगा।

वर्धमान

बढ़ता जाये वैभव ज्ञान।
सुख-शान्ति आनंद महान॥
इसीलिए 'वर्धमान' कहाते।
जन्म काल से जाने जाते॥

वीर

जन्म महोत्सव करने आये।
मेरुगिरी पर न्हवन कराये॥
दक्षिण पग का देख अंगूठा।
चिन्ह शैर का दिखा अनौखा॥
इन्द्र देखकर खुशी मनायो ।
'वीर' नाम जयकार लगाये॥

सन्मति

एक बार त्रिशला के ललना।
झूल रहे चंदन के पलना॥
संजय-विजय मुनिवर आते।
शंका-समाधान पा जाते॥
बालक को मतिमान बताया।
तब से 'सन्मति' नाम कहाया॥

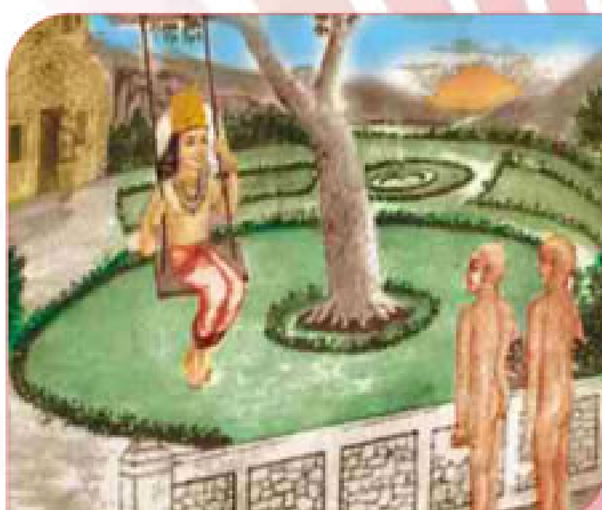

अतिवीर

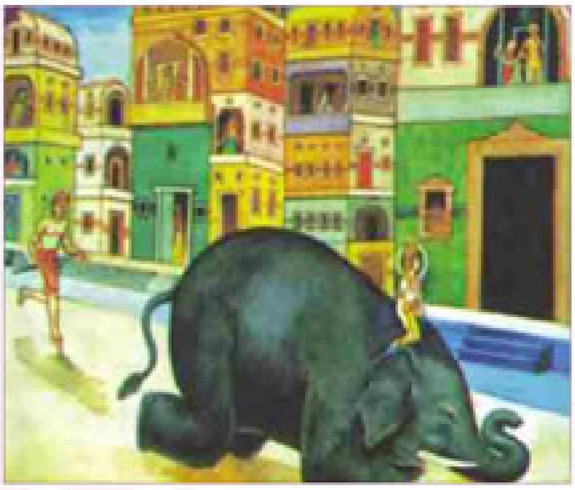

पागल हाथी शोर मचाये।
उधम चारों ओर मचाये।।
वर्धमान के वश में आया।
'अतिवीर' तब नाम कहाया।।

महावीर

वर्धमान जब खेल रहे थे।
मित्रों के संग मेल रहे थे।।
देव परीक्षा करने आया।
रूप नाग का धरके आया।।

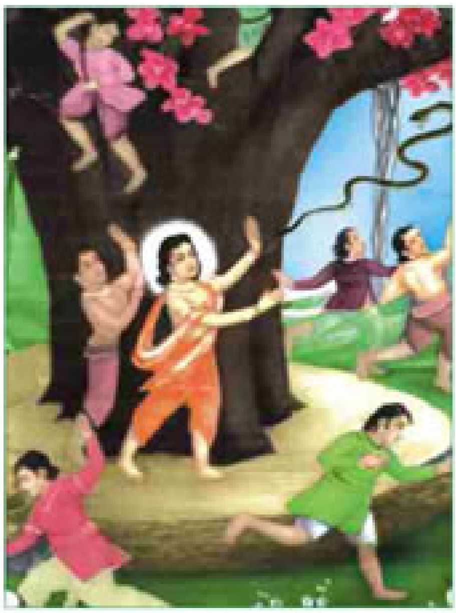

सभी मित्र तो भाग खड़े थे।
वर्धमान निर्भीक लड़े थे।।
देव पराजित हुआ अधीर।
नाम दिया तब जय 'महावीर।।

15 जिन दर्शन ही निज दर्शन

हे वीर की संतान! सुनो

- तुम्हें सुबह जल्दी उठना चाहिए।
  उठकर सर्वप्रथम नौ बार णमोकार मंत्र बोलना चाहिए।

- फिर, माता-पिता एवं बड़ों, बुजुर्गों के चरण स्पर्श करने चाहिए।
- घर में सबसे आपस में जय जिनेन्द्र करना चाहिए।

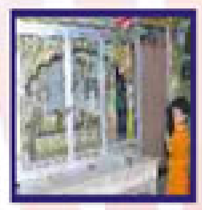

- इसके बाद नहा-धोकर, स्वच्छ वस्त्र पहनकर जिन-मंदिर जाना चाहिए।

जिनेन्द्र देव दर्शन विधि (कविता)

चलो रे भाई मंदिर चलें, दर्शन करने मंदिर चलें।

जिनदर्शन को जायेंगे, अष्ट द्रव्य ले जायेंगे।
पैर धोकर के जायेंगे, मुस्कुराते प्रवेश करेंगे॥

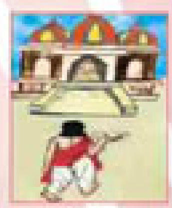

अष्ट द्रव्य

निःसही बोलते जायेंगे, घंटा वहाँ बजायेंगे।
जय जयकार लायेंगे, परिक्रमा तीन लायेंगे॥

निःसही
निःसही
निःसही

पाँच पुंज चढ़ायेंगे, अपना शीश नवायेंगे।
दर्शन पाठ सुनायेंगे, पञ्चप्रभु गुण गायेंगे।

ॐ
जय जय जय
नमोस्तु नमोस्तु नमोस्तु
णमोकार मंत्र

जिनवाणी को ध्यायेंगे,
चार पुंज उन्हें चढ़ायेंगे।

प्रथमं करणं चरणं द्रव्यं नमः

गुरु दर्शन हम पायेंगे।
तीन पुंज चरण चढ़ायेंगे॥

सम्यग्दर्शन
सम्यग्ज्ञान
सम्यग्चारित्रेभ्यो नमः

गंधोदक शीष लगायेंगे,
माथे में तिलक लगायेंगे।

निर्मलं निर्मली करणं
पवित्रं पापनाशनम्
जिन गंधोदकं वन्दे
अष्टकर्म विनाशनम्

अ:सही बोलते आयेंगे, भगवान से जब मिल जायेंगे
रत्नत्रय को पायेंगे, जीवन सफल बनाएँगे

रोज जिन दर्शन करेंगे, जिनेन्द्र सम बन जायेगें

चलो रे भाई मंदिर चलें, दर्शन करने मंदिर चलें

- देव दर्शन के पश्चात् ही नाश्ता, खेलना, पढ़ाई आदि कार्य करना चाहिए ।
- प्रतिदिन तुम ऐसा करोगे तो एक दिन तुम भी भगवान जिनेन्द्र के समान बन जाओगे।

देवभक्ति का सुफल 16

एक मेढ़क भगवान महावीर की भक्ति में गद्गद् होकर कमल पांखुड़ी को मुख में दबाकर दर्शन के लिए चल पड़ा। मार्ग में राजा श्रेणिक के हाथी के पैर के नीचे दब गया और शुभ भावों से मरकर स्वर्ग में देव हो गया। वहाँ से तत्क्षण ही भगवान के समवशरण में दर्शन करने आ गया।

राजा श्रेणिक ने उस देव के मुकुट में मेढ़क का चिन्ह देखकर श्री गौतम स्वामी से उसका परिचय पूछा। वहाँ सभी लोग देव-दर्शन की भावना के फल को सुनकर बहुत ही प्रसन्न हुए।

देखो बालकों! भगवान के दर्शन की भावना से भी कितना पुण्य बन्ध होता है कभी भी खाली हाथ से भगवान और गुरु के दर्शन नहीं करना चाहिए। अष्ट द्रव्य या अक्षत पुंज चढ़ाकर ही दर्शन करना चाहिए ।

यह जिनेन्द्र दर्शन का ही महात्म्य है। याद रखो, भगवान से कुछ माँगना नहीं बस सच्ची श्रद्धा सहित जिन दर्शन करने से स्वयंमेव ही सारे पाप नष्ट होते हैं, आत्म पवित्र होती है, विचार निर्मल व शांत होते है, अनंत उपवासों का फल प्राप्त होता है, एवं उनके गुणों को प्राप्त करने की प्रेरणा मिलती है, ज्ञान और अनंत शक्ति जागृत होती है।

दर्शन पाप नशाता है, दर्शन पुण्य बढ़ाता है,
दर्शन विद्या दाता है, दर्शन मोक्ष दिलाता है।

17 दर्शन - स्तुति

प्रभु पतितपावन मैं अपावन, चरण आयो शरण जी।
यो विरद आप निहार स्वामी, मेट जामन मरणजी॥

तुम ना पिछान्यो आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी।
या बुद्धि सेति निज न जान्यो, भ्रम गिण्यों हितकारजी॥

भव विकट वन में कर्म बैरी, ज्ञान धन मेरो हर्यो।
तब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अनिष्ट गति धरतो फिर्यो॥

धन घड़ी यो धन दिवस यो ही, धन जनम मेरो भयो।
अब भाग्य मेरो उदय आयो, दरश प्रभु को लख लियो॥

छवि वीतरागी नग्न मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरे।
वसु प्रातिहार्य अनन्त गुण जुत, कोटि रवि छवि को हरै॥

मिट गयो तिमिर - मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि आतम भयो।
मो उर हरश एसो भयो, मनु रंक चिंतामणि लयो।

मैं हाथ जोड़ नवाय मस्तक, वीनऊँ तुम चरणजी।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोकपति जिन, सुनहु तारण तरणजी॥

जाचूं नहीं सुर वास पुनि नर, राज परिजन साथ जी।
'बुध' जाचहूँ तुम भक्ति भव भव दीजिए शिवनाथ जी॥

अष्ट प्रातिहार्य

सिंहासन

चंवर

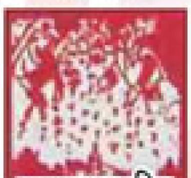
सुरपुष्प-वृष्टि

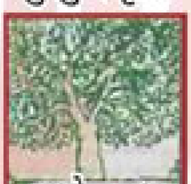
अशोक वृक्ष

दिव्य ध्वनि

भामंडल या प्रभा मंडल

देवदुन्दुभी

छत्र त्रय

अष्ट मंगल द्रव्य

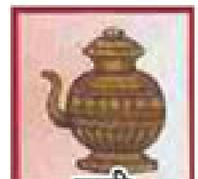
झारी

कलश

चंवर

ध्वजा

बिजना (पंखा)

दर्पण

स्वास्तिक

छत्र

जिनवाणी स्तुति

18

माता तू दया करके, कर्मों से छुड़ा देना,
इतनी सी विनय तुमसे, चरणों में जगह देना।

जीवन के चौराहे पर, मैं सोच रहा कब से,
जाऊँ तो किधर जाऊँ, यह पूछ रहा मन से,
पथ भूल गया हूँ मैं, तुम राह दिखा देना,
इतनी सी विनय तुमसे, चरणों में जगह देना।
माता-तू......

माता आज मैं भटका हूँ, माया के अँधेरे में,
कोई नहीं मेरा है, इस कर्म के रेले में।
कोई नहीं मेरा है, तुम धीर बँधा देना,
इतनी सी विनय तुमसे, चरणों में जगह देना।
माता-तू......

लाखों को उबारा है, मुझको को उबारो तुम,
मझधार में है नैया, उसको भी तिरादो तुम।
मझधार में अटका हूँ, उसे पार लगा देना,
इतनी सी विनय तुमसे, चरणों में जगह देना।

माता तू दया करके कर्मों से छुड़ा देना,
इतनी सी विनय तुमसे, चरणों में जगह देना।

19 गुरु - वन्दना

गुरुवर तेरे चरणों की, मुझें जो धूल मिल जाये,
चरणों की रज पाकर, तकदीर बदल जाये।

मेरा मन बड़ा चंचल है, इसे कैसे मैं समझाऊँ,
इसे जितना भी समझाओ, उतना ही मचलता है।
गुरुवर तेरे ......
मेरी नांव भंवर में है, इसे पार लगा देना,
तेरे एक इशारे से, मेरी नाव उबर जाये।
गुरुवर तेरे ......

नजरों से गिराना ना, चाहे जितनी सजा देना,
नजरों से जो गिर जाए, वो कैसे सम्भल पाये।
गुरुवर तेरे ......

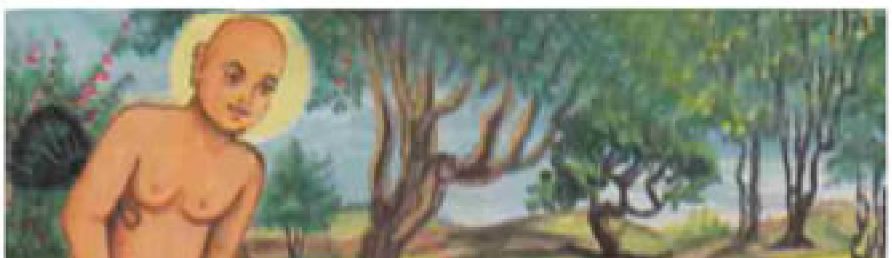

मेरे इस जीवन की,
बस एक तमन्ना है।
गुरु सामने हो मेरे,
और प्राण निकल जाये।

गुरुवर तेरे चरणों की मुझे धूल जो मिल जाये,
चरणों की रज पाकर, तकदीर बदल जाये ।

अभ्यास क्रम 20

प्रश्न - 1 निम्नलिखित वाक्यों में सही विकल्प पर '✓' का निशान करें।

1. तीर्थंकर कितने होते है?
   (a) 24 (b) 5
2. उतम कितने होते हैं ?
   (a) 10 (b) 4
3. जिन्होंने चार घातिया कर्म नाश की।
   (a) अरिहंत (b) सिद्ध
4. हम किसकी संतान है?
   (a) भरत (b) वीर
5. कितने परमेष्ठि के साक्षात् दर्शन होते है?
   (a) 5 (b) 3
6. मुनि महाराज ने वर्धमान का क्या नाम रखा?
   (a) सन्मति (b) महावीर
7. मरते हुए बैल को णमोकार मंत्र सुनाया था ?
   (a) जीवन्धर कुमार (b) पद्‌मरुचि सेठ
8. चींटी किस इन्द्रिय ज्ञान से मिठाई तक पहुँचती है ?
   (a) चक्षु (b) घ्राण
9. सुबह उठकर किसका स्मरण करना चाहिए ?
   (a) टी.वी. (b) महामंत्र
10. हमें कब जिनमंदिर जाना चाहिए?
    (a) पर्युषण में (b) प्रतिदिन

प्रश्न - 2 सही (✓) या गलत (×) का बनाए।

1. राजा श्रीविजय ने जिनधर्म की शरण ली। ( )
2. णमोकार मंत्र में पाँच व्यक्ति को नमस्कार किया है। ( )
3. मैं स्पर्श इन्द्रिय के माध्यम से देखता हूँ। ( )
4. मंत्रराज से सारे पैसे नष्ट हो जाते है। ( )
5. साधु परमेष्ठि को चावल के तीन पुंज चढ़ाते है। ( )
6. अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर (चांदन गाँव, श्री महावीर जी) से मोक्ष पधारे। ( )
7. सब जीवों को दु:खी रखेंगे। ( )
8. हमें मंदिरजी में खाली हाथ जाना चाहिए। ( )
9. सोलहवें तीर्थंकर का चिन्ह हिरण है। ( )
10. हम भी परमेष्ठि बन सकते हैं। ( )

प्रश्न - 3 सही जोड़ी बनाए।

(A)

1.	तीर्थंकर का धर्म शासन	बैल	( )
2.	आदिनाथ	अभिनन्दननाथ जी	( )
3.	आठवें तीर्थंकर	सर्प	( )
4.	बन्दर	धर्मनाथ	( )
5.	चिन्ह अजीव	महावीर	( )
6.	पार्श्वनाथ	चन्द्रप्रभु	( )

(B)

1.	जैन धर्म – मूल मंत्र	जीव	( )
2.	आनन्द लाता, पाप गलाता	पाठशाला	( )
3.	भरतसागरजी महाराज शिक्षा दीक्षा देते हैं	जिनेन्द्र	( )
4.	जीता था, जीता है, जीयेगा	मंगल	( )
5.	पंखा	णमोकार मंत्र	( )
6.	आम मीठा लगता है	तीर्थंकर	( )
7.	इन्द्रियों को जीत लिया	जैन	( )
8.	स्वयं तरे दूसरों को तारें	इन्द्रिय	( )
9.	जिनेन्द्र को मानता है	आचार्य परमेष्ठि	( )
10.	जीव की पहचान	अजीव	( )
11.	जहाँ सद्ज्ञान मिलता	रसना इन्द्रिय	( )

पढ़ेंगे लिखेंगे,
करेंगे अच्छा काम।
धर्म में भी अपना,
करेंगे ऊँचा नाम।
सुबह जल्दी उठना,
और लेना प्रभु का नाम।
माता-पिता को
करना प्रणाम।

21 जैन प्रतीक

जैन प्रतीक
तीन लोक

जैन धर्म का
झण्डा

'अहिंसा परमो धर्मः'

जैनम् जयतु शासनम्

"जैन धर्म किसका है - जो अपना ले उसका है !!"

एक दो तीन चार – जैन धर्म की जय जय कार।
पाँच छः सात आठ – जैन धर्म का सीखो पाठ।
नौ दस ग्यारह बारह – जैन धर्म का बज़ा नगाड़ा।
तेरह चौदह पन्द्रह सोलाह – जैन धर्म का बच्चा बोला।
सत्तरह अठारह उन्नीस बीस – जैन धर्म को नवाओ शीष।
इक्कीस बाईस तेईस चौबीस – जैन धर्म के तीर्थंकर चौबीस॥
हाय हैलो छोड़िये – 'जय जिनेन्द्र' बोलिए!
वीर प्रभु का क्या संदेश – 'जिओ और जीने दो!'
सत्य अहिंसा प्यारा है – यही हमारा नारा है!
महावीर के संदेशो को – घर-घर तक पहुँचाना है!
राग में न द्वेष में – विश्वास दिगम्बर वेष में!
जब तक सूरज चाँद रहेगा – मुनियों का सम्मान रहेंगा!
दिगम्बर मुद्रा देख लो – त्याग करना सीख लो!
माँ का बेटा कैसा हो – भरतसागर जैसा हो!
माँ की बेटी कैसी हो – चन्दनबाला जैसी हो
माता-पिता की सेवा – हम करेंगे, हम करेंगे।
गुरुजन का सम्मान – हम करेंगे, हम करेंगे।
धर्म की रक्षा – हम करेंगे, हम करेंगे।

त्रिशला नंदन वीर की जय बोलो महावीर की!!!

जैन सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ने रात्रि में सोलह स्वप्न देखे। राजा चन्द्रगुप्त दिगम्बर मुनि जैनाचार्य श्री भद्रबाहु स्वामी के पास जाकर स्वप्नों का फल सुनता है। उन स्वप्नों में से यहाँ पन्द्रहवें स्वप्न का चित्र दर्शाया है– जिस चित्र में एक स्वर्णरथ को दो छोटे–छोटे गाय के बछड़े खीचे जा रहें हैं। इस स्वप्न का फल निमित्त ज्ञानी आचार्य भद्रबाहु स्वामी ने बताया है कि : पंचम काल में संयम का भार युवा पीढ़ी वहन करेगी। मुनि धर्म का निर्वाह युवावस्था में ही हो सकेगा।

अहो! यह धर्म रूपी रथ हम बालकों के कन्धों पर है, अतः
हमें अच्छी तरह धर्मज्ञान पाना चाहिए और सदाचरण करना
चाहिए ताकि हमारा जैनधर्म रूपी
रथ सदा–सदा आगे बढ़ता रहे!

'जैनम् जयतु शासनम्'